कुसुम के लिए आकस्मिक योजना

जुताई तथा खेत की तैयारी

खरीफ परती : कुसुम को अच्छे अंकुरण तथा फसल में पौधों के बेहतर स्थापित होने के लिए कठोर उप मृदा और पर्याप्त नमी से युक्त शीतहीन खेत या क्यारी की आवश्यकता होती है| रबी वाले क्षेत्रें की एकल फसल की काली मिट्टियों में मानसून के दौरान 3-4 बार हैरो चलाने से खेत की गहरी जुताई होती है या मिट्टी पलटने से खेत खरपतवारों से मुक्त रहते हैं | यदि खेतों में हानिकारक खरपतवार मौजूद हों तो रबी की फसल की कटाई के तुरंत बाद ग्रीष्म ऋतु में खेत की गहरी जुताई की जानी चाहिए | सर्वाधिक नमी को सुरक्षित रखें और इस प्रकार वांछित अवस्था वाले खेत या क्यारी तैयार करें |

खरीफ की फसल वाले क्षेत्र **:** जब कुसुम की खेती अल्पावधि अनाज या फलीदार फसलों के बाद की जानी होती है तो खरीफ फसलों की कटाई के बाद अत्यधिक गहरी जुताई अथवा बार-बार की जाने वाली जुताई से बचना चाहिए क्योंकि इससे मिट्टी में संरक्षित नमी नष्ट हो जाती है और इसके परिणामस्वरूप कम पौधे उगते हैं और जो उगते भी हैं वे पुष्ट नहीं होते हैं | यदि परिस्थितियां अनुमति दें (यथासंभव शून्य जुताई को प्राथमिकता दें) तो खरीफ फसलों की कटाई के तत्काल बाद खेत में 1 या 2 बार हैरो चलाएं (दक्कन रबी में) या पाटा चलाकर/हैरो चलाकर (मटियार दुमट, जलौढ़, बलुआ दुमट आदि मिट्टियों में) उथली जुताई करें/तवा चलाएं | खरीफ फसलों को खरपतवार मुक्त रखने से कुसुम की फसल के लिए बहुत कम जुताई की जरूरत पड़ती है|